विशेषण

विशेषण की परिभाषा

संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं;

जैसे - काला, छोटा, लम्बा, ऊँचा, भारी सुन्दर, एक, दो आदि।

उदाहरण के लिए -

मीना अपने घर में एक पार्टी दे रही है। उसके लिए उसने कुछ ज़रूरी सामान की सूची तैयार की है -

1. एक किलो रसगुल्ले

2. लाल रंग के रिब्बन

3. चटपटी आलू भुजिया का पैकेट

4. क्रीमी चॉकलेट पेस्ट्री

5. एक बड़ी टेबल

6. पन्द्रह कुर्सियाँ

7. दस समोसे

उपयुक्त सूची में एक किलो, लाल, चटपटी, क्रीमी, एक, पन्द्रह आदि संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं। इन्हीं शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जिस तरह संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

उसी तरह जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है;

जैसे - लाल गुलाब

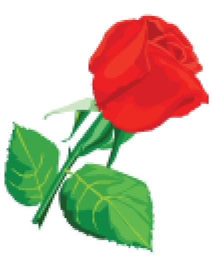

विशेषण के चार भेद माने जाते हैं -

(क) गुणवाचक विशेषण

(ख) संख्यावाचक विशेषण

(ग) परिमाणवाचक विशेषण

(घ) सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द (संज्ञा व सर्वनाम) के गुण दोष, रंग, आकार, अवस्था, स्थिति आदि विशेषता का बोध कराएँ, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(क)	भाव	-	अच्छा, बुरा, डरपोक, शिष्ट, कायर, वीर आदि।
(ख)	रंग	-	लाल, नीला, पीला, हरा, काला, सफेद, चमकीला, फीका आदि।
(ग)	दशा	-	पतला, मोटा, सूखा, गाढ़ा, पिघला, भारी, गीला, गरीब, अमीर, रोगी, स्वस्थ, पालतू आदि।
(घ)	आकार	-	गोल, सुडौल, नुकीला, समान, नाटा, छोटा, लम्बा, चौड़ा, पतला, दुबला आदि।
(ङ)	समय	-	अगला, पिछला, दोपहर, संध्या, सवेरा, प्रात:काल, रात्रि आदि।
(च)	स्थान	-	बाहरी, भीतरी, पंजाबी, जापानी, पुराना, ताज़ा, आगामी आदि।
(छ)	गुण	-	भला, सुन्दर, बुरा, मीठा, दानी, खट्टा, सच, झूठ, सीधा, सच्चा, आदि।

(ज)	दिशा	-	उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी आदि।

उदाहरण -

(i) पीले रंग का फूल है।

(ii) पतला लड़का जा रहा है।

(iii) चमकदार आँखें

(iv) संध्याकाल में घूमने जाएँगे।

(v) भीम क्रोधित स्वभाव के थे।

(vi) राम सहनशील व्यक्ति थे।

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से (संज्ञा व सर्वनाम) की संख्या का ज्ञान (बोध) हो, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - एक, दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों इत्यादि।

उदाहरण -

(i) दो पुस्तक लाना।

(ii) पहली कक्षा की पुस्तक दो।

(iii) 400 रुपए का बिल आया है।

(iv) कुछ खाना खा लो।

संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद कहे जाते हैं -

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का पता चले, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। दूसरे शब्दों में ये भी कह सकते हैं जिन शब्दों से गिनती का ज्ञान हो, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के चार भेद हैं -

(क) गुणवाचक :- जिन शब्दों के द्वारा गिनती का बोध हो; जैसे -

• एक लड़की बाज़ार जा रही है।

• पाँच केले लाना।

• सौ रुपए का समान है।

• हमारी पार्टी में पचास लोग आएँगे।

(ख) क्रमवाचक :- जिन शब्दों के द्वारा संख्या के क्रमानुसार होने का ज्ञात हो; जैसे -

• पहली कक्षा में पढ़ता हूँ।

• तैराकी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

• तीसरे नंबर पर बैठो।

• दूसरी पंक्ति पर खड़े हो।

(ग) आवृत्तिवाचक :- जिन शब्दों के द्वारा केवल आवृत्ति का बोध हो; जैसे -

• तुम सुरेश से दुगना खाते हो।

• स्नेहा तुमसे तिगुना कमाती है।

• श्यामा तुमसे तिगुना मोटी है।

• तुम श्रवण से ज़्यादा लंबे हो।

(घ) समुदायवाचक :- जिन शब्दों के द्वारा सामूहिक संख्या का ज्ञान हो; जैसे -

• हम चारों साथ पढेंगे।

• तुम पाँचों इसको उठाओ।
• पचास लोग साथ चलेंगे।

• वो दस लोग खेल रहे हैं।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों में अनिश्चित संख्या का बोध हो, वह अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

• कुछ बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

• कितने लोग थे।

• कई सारे सेब श्याम लाया है।

• रैली में अनेको की संख्या में लोग शामिल हुए।

• इस कपड़े पर बहुत से रंगो के डिजाइन है।

परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से (संज्ञा व सर्वनाम) की मात्रा अथवा नाप-तोल का ज्ञान हो, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - किलोमीटर, मीटर, आधा किलो, पावभर, गज, सेंटीमीटर, लीटर इत्यादि।

उदाहरण -

(क) खीर में चीनी कम लग रही है; थोड़ी और डाल दो।

(ख) कपड़ा थोड़ा छोटा लग रहा है; कुछ और ले आना।

(ग) तुम 10 लीटर दूध ले आना।

(घ) मेरी गाड़ी 15 किलोमीटर चली है।

इन्हीं आधार पर परिमाणवाचक के दो भेद माने जाते हैं -

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जिन शब्दों से वस्तु की निश्चित मात्रा का पता चलता (ज्ञान हो) है, उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं;

उदाहरण -

• श्याम की कमीज़ 2 मीटर कपड़े की बनी है।

• आटा 20 किलो लाना।

• ये मकान 200 मीटर में बना है।

• सूरत से दिल्ली 400 किलोमीटर दूर है।

यहाँ 2 मीटर, 20 किलो, 200 मीटर, 400 किलोमीटर से वस्तु अथवा स्थान के निश्चित परिमाण (मात्रा) का ज्ञात होता है, इसलिए यहाँ निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है।

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जिन शब्दों से वस्तु की अनिश्चित मात्रा का पता चलता हो (ज्ञान हो), उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं;

उदाहरण -

• चाट में मिर्च थोड़ी ज़्यादा है।

• सब्जी में नमक ज़्यादा है, थोड़ा पानी डाल दो।

• पेट्रोल कुछ ही बचा है।

• मेरे पास कम पैसे हैं और दे दो।

यहाँ थोड़ी, थोड़ा, कुछ ही, कम जैसे शब्दों से वस्तु अथवा स्थान के निश्चित परिमाण (मात्रा) का ज्ञात नहीं हो रहा है, इसलिए यहाँ अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण है।

सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम विशेषण के रुप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(क) यह मेरी फ्रॉक है।

(ख) कोई आदमी आ रहा है।

(ग) कौन दरवाज़े पर खड़ा है।

(घ) जिसका खाना हो, खा ले।

सर्वनाम तथा विशेषण में अंतर -

जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा शब्द के स्थान पर हो, उसे सर्वनाम कहते हैं और जो सर्वनाम विशेषण के रुप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में वस्तुत: भ्रम की स्थिति सी लगती है क्योंकि दोनों में ही समान शब्द प्रयुक्त होते हैं, मगर गौर से देखा जाए तो अंतर दोनों के प्रयोग में होता है।

उदाहरण के लिए -

	सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
1	वह बैंक आया।	वह बैंक बहुत बड़ा है।
2	तुम किससे काम करवाओगे।	किस से मिलना है।
3	खाने को कुछ दो।	खाने को कुछ सेब दो।

4	यह घर <u>मेरा</u> है।	यह <u>मेरा</u> घर है।
5	बाहर <u>कोई</u> खड़ा है।	<u>कोई</u> बाहर रो रहा है।

प्रविशेषण

जो शब्द विशेषण से पहले लगकर उनकी विशेषता बताते हैं; उन्हें प्रविशेषण कहते हैं;

जैसे -

(1) फल <u>बहुत</u> मीठे हैं।

(2) तुम <u>कुछ ज़्यादा</u> ही चतुर हो।

(3) समारोह में <u>लगभग</u> बीस लोग आए थे।

यहाँ मीठे, कुछ ज़्यादा तथा बीस विशेषण है तथा बहुत, कुछ ज़्यादा तथा लगभग शब्द इन विशेषण शब्दों की भी विशेषता बता रहे है, इसलिए ये प्रविशेषण हैं।

<u>विशेषण की अवस्थाएँ-</u>

विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। विशेषता बताने वाली वस्तुओं के गुण-दोष अधिक व कम होते हैं। गुण-दोष के इस अधिक व कम होने को तुलनात्मक तरीके से जाना जा सकता है और इसी तुलनात्मक दृष्टिकोण से विशेषणों की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं -

(क) मूलावस्था

(ख) उत्तरावस्था

(ग) उत्तमावस्था

(क) मूलावस्था :- मूलावस्था में केवल सामान्य विशेषता ही प्रकट होती है। इसमें विशेषण का तुलनात्मक रुप नहीं होता है; जैसे -

(1) आशा सीधी लड़की है।

(2) विमलेश अच्छा लड़का है।

(3) चंद्रमा शीतलता देता है।

(ख) उत्तरावस्था :- जब किन्हीं दो व्यक्तियों/वस्तुओं के गुण-दोष की आपस में तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तरावस्था में प्रयुक्त होता है; जैसे -

(1) निमेश, राघव से अधिक सचेत है।

(2) राम, लक्ष्मण की अपेक्षा अधिक धैर्यवान हैं।

(3) निशा, अवंतिका से अधिक बुद्धिमान है।

(4) चारू, लता से ज़्यादा अच्छा खाना पकाती है।

(ग) उत्तमावस्था :- उत्तमावस्था के अंतर्गत दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके किसी एक की सबसे ज़्यादा या सबसे कम आँका (बताया) जाता है; जैसे -

(1) सीता सबसे अधिक गुणी है।

(2) सुलोचना अत्यधिक रुपसी है।

(3) कविश नीच व्यक्ति है।

(4) रुपेश गुणी बालक है।

अवस्थाओं के रुप-

अधिक और सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग करके उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के रुप बनाए जा सकते हैं। तत्सम शब्दों के मूलावस्था में विशेषण का मूल रुप, उत्तरावस्था में 'तर' और उत्तमावस्था में 'तम' का प्रयोग होता है; जैसे -

	मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
1	दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
2	उच्च	उच्चतर	उच्चतम

3	गुरु	गुरुतर	गुरुतम
4	अधिक	अधिकतर	अधिकतम
5	तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
6	मधुर	मधुरतर	मधुरतम
7	द्दढ़	द्दढ़तर	द्दढ़तम
8	विशाल	विशालतर	विशालतम
9	प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
10	उत्कृष्ट	उत्कृष्टतर	उत्कृष्टतम
11	निकट	निकटतर	निकटतम
12	सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
13	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

14	महान	महानतर	महानतम
15	लघु	लघुतर	लघुतम
16	निम्न	निम्नतर	निम्नतम

<u>विशेषणों की रचना</u>-

रचना की दृष्टि से विशेषण तीन प्रकार के होते हैं -

(क) मूल विशेषण :- कुछ शब्द मूल रुप से ही विशेषण होते हैं; जैसे - सुंदर, ऊँचा, काला आदि।

(ख) उपसर्ग, प्रत्यय जोड़कर :-

उपसर्ग लगाकर :- अटल, निराकार

प्रत्यय लगाकर :- इमरती, व्यावहारिक

(ग) समास का प्रयोग कर :- दो से या दो शब्दों को मिलाकर विशेषण बनाए जाते हैं;

जैसे -

(1) खाता-पीता

(2) हँसता-रोता

1.<u>संज्ञा शब्दों से विशेषण निर्माण</u>-

<u>संज्ञा</u>	**<u>विशेषण</u>**
उदास	उदासी

कल्पना	काल्पनिक
मास	मासिक
अंक	अंकित
प्रांत	प्रांतीय
मद	मादक
घर	घरेलू
पाप	पापी
धर्म	धार्मिक
गर्व	गर्वीला
मन	मानसिक
गाँव	गँवार

रंग	रंगीला
कलंक	कलंकित
बुराई	बुरा
चंचलता	चंचल
अर्थ	आर्थिक
स्थान	स्थानीय
रेत	रेतीला
साहस	साहसी
बल	बलवान
ज्ञान	ज्ञानी
काँटा	कँटीला

विष	विषैला
शर्म	शर्मीला
धन	धनवान
लोक	लौकिक
वेद	वैदिक
शहर	शहरी
भारत	भारतीय
पर्वत	पर्वतीय
समाज	सामाजिक

2.सर्वनाम शब्दों से विशेषण निर्माण-

यह	ऐसा

तुम	तुमसा
वह	वैसा
जो	जैसा

3.<u>क्रिया शब्दों से विशेषण बनाना</u>-

क्रिया	**<u>विशेषण</u>**
टिकना	टिकाऊ
घूमना	घुमक्कड़
मरना	मरियल
हँसना	हँसोड़
भगना	भगोड़ा
बनाना	बनावटी

पढ़ाना	पढ़ाकू

4.<u>अव्यय शब्दों से विशेषणों की रचना</u>-

अव्यय	विशेषण
ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी
नीचे	निचला
भीतर	भीतरी
पीछे	पिछला